इन दिनों सरकारी स्कूल एक तरफ बच्चों की अनुपस्थिति व नामांकन से जूझ रहे हैं और दूसरी ओर बेहतर शिक्षा से। हालांकि इन दोनों चीज़ों में गहरा रिश्ता है। अगर स्कूल में बेहतर सीखना–सिखाना होता है तो वहां बच्चे टिकते हैं। अगर स्कूल वक्त में बच्चों की मनपंसद चीज़ें हों तो फिर वे दोपहर बाद भी रहते हैं। यह मानना है विश्वजीत सिंह कुशवाह का। आदिवासी क्षेत्र के खरगोन जिले के गोगांवा विकास खंड में माध्यमिक विद्यालय ठिबगांव बुजुर्ग के शिक्षक व स्टॉफ ने मिलकर जिस कार्ययोजना को अंजाम दिया है वह अनुकरणीय पहल है। उल्लेखनीय है कि विश्वजीत सिंह कुशवाह 2017 से इस स्कूल में बतौर सहायक शिक्षक पदस्थ हैं। विश्वजीत सिंह कुशवाह को 2016–17 में बच्चों को सीखने–सिखाने के संदर्भ में राज्य स्तरीय पुरस्कार मिल चुका है।

एक स्कूल की संकल्पना में शामिल है बच्चों को आनन्ददायी वातावरण उपलब्ध कराना जिसकी छांव में बच्चों का सीखना–सिखाना बेहतर होता है। विश्वजीत सिंह कहते हैं कि स्कूल में हम बच्चों के लिए वे तमाम साधन–सुविधाएं मुहैया करवाने की भरपूर कोशिश कर रहे हैं जो सीखने–सिखाने के लिए जरूरी हैं। उनका यह भी मानना है कि बच्चों के लिए वे तमाम चीज़ें स्कूल का हिस्सा होनी चाहिए जो वे चाहते हैं, केवल पाठ्यपुस्तकों के भरोसे यह संभव नहीं।

अगर आप ठिबगांव बुजुर्ग स्कूल में जाएं तो वहां की कक्षाएं नीरस व उबाऊ नहीं दिखेंगी। बच्चों की कक्षायें बच्चों द्वारा रची गई सामग्री से ओतप्रोत हैं। एक कमरे में बच्चे कैरम खेलते हुए दिख जाएंगे। वहीं दूसरी कक्षा में बच्चे शतरंज खेलते हुए देखे जा सकते हैं। जब मैं कमरे में घुसा तो एक शिक्षक व एक छात्र शतरंज का खेल खेल रहे थे। बच्चों व शिक्षक के बीच शतरंज एक जरिया बन जाता है आपसी संबंध बनाने का। बाकी तो शतरंज के खेल के जरिए सोचने, रणनीति बनाने के हुनर विकसित होंगे ही।

स्कूल का एक कमरा कबाड़ से जुगाड़ (विज्ञान शिक्षण) को समर्पित है। वाकई यह कमरा अपने नाम को सार्थक करता दिखता है। यह कमरा बच्चों द्वारा रचे गए प्रयोग व टीचिंग लर्निंग मटीरियल से भरा पड़ा है। प्लास्टिक की बोतलों, ढक्कनों, तीलियों, चूड़ियों, चिंयों, आइस्क्रीम की स्टिक से बनाए गए मॉडल व प्रयोग यहां सजाकर रखे गए हैं। जो भी बच्चे निर्मित करते हैं वे स्कूल में प्रदर्शित किए जाते हैं। बच्चों को इस बात की खुशी होती है कि उनकी बनाई चीज़ों को ससम्मान स्थान दिया जाता है। यह बच्चों में आत्मविश्वास भी पैदा करता है।

'पढ़ना' तो पढ़ने से ही आता है। यह कहते हुए विश्वजीत सिंह बताते हैं कि बच्चों के लिए पाठ्यपुस्तकों से परे जाकर पढ़ने–लिखने के लिए एक पुस्तकालय की स्थापना की गई है। पुस्तकालय बच्चों के लिए स्कूल वक्त में हमेशा खुला होता है। एक तरह से बच्चे ही इस पुस्तकालय का संचालन करते हैं। पुस्तकालय में कम से कम 300 किताबें हैं जिसमें हर तरह की किताबें हैं। बच्चे अपनी मर्जी से किताबें स्वयं ही इश्यू करते हैं और पढ़ते हैं।

संदर्भ से सीखना व संदर्भ में सीखना ही बेहतर होता है। विश्वजीत सिंह बताते हैं कि वे बच्चों को लिखने के लिए अपने संदर्भ से जोड़ते हैं। बच्चों को दैनिक जीवन की घटनाओं पर लिखने के लिए प्रेरित किया जाता है। पिछले दिनों जब दिलीप दाहोद्र नामक छात्र ने कहानी लिखी तो उसे बाल विज्ञान पत्रिका चकमक को भेज दिया। चकमक में उस बच्चे की कहानी छपी। उस बच्चे को खुशी हुई जो अन्य बच्चों के लिए प्रेरणा बनी। बच्चे तभी लिखने की ओर अग्रसर हो पाते हैं जब उन्हें कोई बात जरूरी लगती है कि इसे तो लिखना ही चाहिए। बच्चों को ऐसे तमाम अवसर उपलब्ध कराने की कोशिश की जाती है। पढ़ने के लिए कक्षा में एक बोर्ड स्थापित किया गया है जहां बच्चे खुद ही अखबारों के लेख व खबर चस्पां करते हैं। यहां बच्चे अपने मन से लिखकर भी चस्पां करते रहते हैं। विश्वजीत सिंह ने बताया कि बच्चों को एक बार विषय दिया कि वे स्कूल आने में क्या–क्या समस्याएं आती है, इस पर कुछ लिखें। और बच्चों ने लिखा। बच्चों को अब सुझाव दिया कि इसे आप एक शीट पर चित्रात्मक ढंग से प्रस्तुत करें। फिर क्या था! एक छात्रा ने जो संकलन किया उसे यहां देखा जा सकता है। शिक्षक कहते हैं कि मौलिक लेखन तभी संभव होता है जब बच्चों के दिल से आवाज़ निकले और वे उसे लिखें।

शिक्षा सत्र 2018–19 में ठिबगांव स्कूल की पहल पर विज्ञान मेले का आयोजन किया गया जिसमें आसपास के स्कूलों सुरपाला व ठिबगांव खुर्द के बच्चे भी शामिल हुए। इसी प्रकार से स्कूल में नियमित रूप से बालसभाओं का आयोजन किया जाता रहा है जिसमें अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन से सहायता मिलती है।

बच्चे कक्षा की चारदीवारी में बैठकर बोर हो जाते हैं। अगर वयस्कों के साथ भी ऐसा रोजाना हो तो हम भी परेशान हो जाएंगे। बच्चे कक्षा की चारदीवारी में मजबूरन ही बैठेंगे। इसका एक और निहितार्थ है। एनसीएफ कहता है कि बच्चों को पाठ्यपुस्तकों से परे ले जाकर कक्षा की चारदीवारी से बाहर की दुनिया से जोड़ने की जरूरत है। इसके लिए हम कोशिश करते रहते हैं। विश्वजीत सिंह बताते हैं कि जब अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन की ओर से हमें एक्सपोजर विजिट के लिए ले जाया गया तो मेरे दिमाग में यह बात आई कि क्यों न हमें भी बच्चों को अपने स्कूल से बाहर ले जाना चाहिए। अक्सर स्कूलों में एक किस्म का प्रतिरोध है कि बच्चों को लेकर बाहर जाना मुश्किल है। कुछ इस तरह की बातें दिमाग में आती हैं कि बच्चों को स्कूल से बाहर ले जाने पर कोई दुर्घटना घट सकती है या कि प्रशासन से इजाजत नहीं मिल सकेगी। लेकिन जैसा कि हमारी शिक्षा की नीतियां अगर कहती हैं तो फिर इसे अपनाने का ही मामला है।

फाउंडेशन की ओर से मुझे कुछ एक्सपोजर विजिट में जाने का मौका मिला तो मुझे एहसास हुआ कि आखिर मैं बच्चों के साथ इसे क्यों नहीं कर सकता! और मैंने ऐसा ही किया। इस वर्ष बच्चों को विकास खंड मुख्यालय पर ले जाकर विविध सार्वजनिक संस्थानों से रूबरू कराने की पेशकश की। इसके लिए सबसे पहले हमने स्टॉफ में बातचीत की और प्रधानाध्यापक ने सहमति दी। हमारे सामने असल चुनौती थी बच्चों के पालकों को राजी करना। चाहे आप कहते रहें कि ग्रामीण माता–पिता अपने बच्चों की ओर ध्यान नहीं देते। लेकिन यह पूरी तौर पर गलत है। इस धारणा का कोई आधार नहीं है।

जब मैं बच्चों के माता–पिता से एक्सपोजर विजिट पर ले जाने के लिए मिलने गया तो उन्होंने मुझसे कईं सवाल किए। बच्चे छोटे हैं, उनकी देखभाल कौन करेगा, बच्चों को कुछ हो गया तो...! मैंने उन्हें विश्वास दिलाया, मैं उनके साथ रहूंगा। अपनी जिम्मेदारी पर बच्चों को लेकर जा रहा हूं। आखिर बच्चों के माता–पिता तैयार हो गए। अगले दिन बच्चों से बातचीत की। बच्चों के साथ मिलकर तैयारी की और अगले दिन हम गोगांवा विकास खंड मुख्यालय पर बस के जरिए पहुंच गए। बच्चों में उत्साह था। हर कोई सहज था। विकास खंड मुख्यालय पर सामुदायिक अस्पताल, थाना, बैंक और विकास खंड शिक्षा कार्यालय पर बच्चे गए और उन्होंने वहां की कार्यप्रणाली को जाना–समझा। बच्चों से विकास खंड शिक्षा अधिकारी ने बातचीत की। यह पहला मौका था जहां विकास खंड शिक्षा अधिकारी के कार्यालय में बच्चे पहुंचे। विकास खंड शिक्षा अधिकारी के अनुसार उनके कार्यकाल में ऐसा कभी नहीं हुआ कि जो कार्यालय स्कूली शिक्षा को सुचारू रूप से चलाने के लिए बनाया गया है वहां स्कूली बच्चे आएं। बच्चों ने विकास खंड शिक्षा अधिकारी के सामने अपनी मांग रखी कि हमारे स्कूल में गणित के शिक्षक नहीं हैं। आप गणित के शिक्षक की व्यवस्था करें। विकास खंड शिक्षा अधिकारी ने बच्चों को आश्वस्त किया। इसे अनूठी पहल कहा जाना चाहिए।

मैंने पाया कि बच्चे आत्मविश्वास के साथ सहजतापूर्वक सवाल–जवाब कर रहे थे। आखिर सवाल करना भी तो शिक्षा का एक अहम् उद्देश्य है। आगे विश्वजीत सिंह बताते हैं कि अगले दिन बच्चे स्कूल में एक कक्ष में एकत्र हुए और अपने–अपने अनुभवों का आदान–प्रदान किया। बच्चों को अपने–अपने अनुभव लिखने के लिए कहा गया और यह दिलचस्प है कि प्रत्येक बच्चे ने एक्सपोजर विजिट के अनुभवों को लिखा जिनका संकलन स्कूल में रखा गया है।

एक स्कूल में बच्चों के लिए बुनियादी सुविधाएं तो होनी ही चाहिए। पानी, शौचालय और खेलने का मैदान आदि। ये सब ठिबगांव स्कूल में आपको देखने को मिल जाएंगे। पानी चौबीसों घंटे उपलब्ध हो सके इसके लिए स्कूल की ओर से पहल की गई। गांव की सार्वजनिक जल व्यवस्था से स्कूल को जोड़ा गया। पानी की एक टंकी स्कूल के मध्यान्ह भोजन कक्ष में थोड़ा ऊपर को रखी गई ताकि पानी नल के जरिए बच्चों की पहुंच में हो। स्कूल को हरा–भरा करने की जो पेशकश की गई उसमें बच्चों के योगदान को भुलाया नहीं जा सकता। स्कूल कैंपस में लगभग 200 से अधिक पौधे लगाए गए जो अब लहलहा रहे हैं। इन पौधों की नियमित देखभाल जरूरी है। इसे बच्चों व स्टॉफ ने अच्छे से समझा और उनकी देखभाल की जाती है। पौधे लगाना तो आसान है मगर उनकी परवरिश का इंतजाम जरूरी है। स्कूल में बच्चे व स्टॉफ के सदस्य मिलकर पौधों की नियमित देखभाल करते हैं। विश्वजीत सिंह कहते हैं कि एक गर्मी का मौसम अगर इन पौधों ने झेल लिया तो इन्हें फिर कोई दिक्कत नहीं होगी। कुछ लोग कहते हैं कि फलदार पौधे लगाने का क्या तुक? स्टॉफ के सदस्य बताते हैं कि फलों मसलन अमरूद, आम व सहजन आदि के पेड़ों से हरियाली तो होगी ही साथ ही फल भी मिलेंगे। क्यों न बच्चे व गांव के लोग फलों का लुत्फ भी उठाएं।

स्कूल में बच्चों का नामांकन बढ़े इसके लिए तो शिक्षकों को ही कोशिश करनी होगी। विश्वजीत सिंह बताते हैं कि पिछले दो वर्षों से आसपास के फीडर गांवों से सपंर्क किया जाता है। इसके लिए पेंफलेट छपवाकर पालकों तक पहुंचाना, बैनर बनाकर गांव के सार्वजनिक स्थल पर चस्पां करने जैसी कोशिशों के चलते बच्चों का नामांकन बढ़ा है। "जब मैं इस स्कूल में पदस्थ हुआ तो ग्राम सभा में मैंने अपनी ओर से बात रखी थी कि सरकारी स्कूल में बच्चों को जरूर भर्ती करवाना चाहिए। सरकारी स्कूलों में जहां इतनी सुविधाएं आम समाज के बच्चों को दी जा रही है, इसका फायदा उठाना चाहिए।"

पिछले वर्ष की ही तरह इस वर्ष स्कूल की ओर से पेंफलेट का वितरण किया गया। पेंफलेट में शिक्षा विभाग, शासन की ओर से जो सुविधाएं दी जा रही है उनका जिक्र तो किया ही है साथ ही स्कूल में शिक्षक स्टॉफ द्वारा प्रयास किए जा रहे हैं, उनका भी जिक्र है। यह पेंपलेट सरकारी स्कूलों को लेकर बनी उस धारणा को तोड़ता है जो समाज में व्याप्त हैं। ऐसा नहीं कि सरकार की ओर से कोशिशें नहीं हो रही हैं। शासन द्वारा स्कूलों को दी जा रही सुविधाओं के बारे में भी समाज में सही जानकारी का अभाव है। जो जानकारी समाज में है भी तो वह नकारात्मकता का लबादा ओढ़े हुए हैं। ठिबगांव बुजुर्ग स्कूल का स्टॉफ उन सुविधाओं को समाज के सामने प्रस्तुत करके एक मिसाल भी रचता दिखता है। विश्वजीत सिंह बताते हैं कि स्कूल में बच्चों के नामांकन को लेकर किए जा रहे प्रचार–प्रसार को देखते हुए बच्चों की संख्या में बढ़ोत्तरी हुई है। वे यह भी कहते हैं कि अगर निजी संस्थान अपना प्रचार–प्रसार व विज्ञापन करते हैं तो सार्वजनिक स्कूलों को इसे लेकर क्यों चुप बैठना चाहिए?

– बीईओ, गोगांवा

श्री विश्वजीत सिंह कुशवाह समय के पाबंद हैं। आप बच्चों के मन की बात को पढ़ लेते हैं। आपने स्कूल में बच्चों के लिए अनेक कम लागत के टीएलएम बनाए हैं और उनका इस्तेमाल कक्षा शिक्षण में करते हैं। बच्चों की जिज्ञासा को भलिभांति समझते हुए आप कक्षा–शिक्षण की व्यूहरचना करते हैं। आपने न केवल सीखने–सिखाने को बेहतर बनाने की दिशा में कार्य किया बल्कि स्कूल में बच्चों के नामांकन बढ़ाने में आपकी महती भूमिका रही है।

– भूपेंद्र सिंह चौहान, विकास खंड शिक्षा अधिकारी, गोगांवा

(विश्वजीत सिंह कुशवाह की कालू राम शर्मा व प्रीति वर्मा से हुई बातचीत पर आधारित)

जैसे कोई सपना जी रहा था मैं

वंशीधर जोशी
प्रधानाध्यापक
राजकीय प्राथमिक विद्यालय बोहाला
बागेश्वर, उत्तराखण्ड

सहायक अध्यापक – अशोक कुमार
भोजन माता – मोहनी देवी
नामांकन – 48